प्रति,

श्रीमान मुख्य कार्यपालन अधिकारी महोदय,
नेशनल मेडीशनल प्लान्ट बोर्ड दिल्ली

बिषय— चम्बल अंचल में दस लाख गुग्गुल बृक्षारोपण मिशन हेतु।

महोदय,

बिषयानतर्गत निवेदन है कि सुजाग्रति समाज सेवी संस्था मुरैना द्वारा आपके सहयोग से चंबल अंचल में दस लाख गुग्गुल बृक्षारोपण मिशन चलाना चाहती है जिसका परियोजना प्रस्ताव आपके अवलोकनार्थ एवं आवश्यक कार्यावाही हेतु प्रस्तुत है।

अतः आपसे विन्रमता पूर्वक अनुरोध है इस परियोजना प्रस्ताव से सम्बन्धित अन्य दस्तावेज व जानकारी की आवश्यकता हो तो अवगत कराने की कृपा करें।

प्रतिलिपि—

1. डाइरेक्टर आर सी एफ सी जबलपुर
2. एम डी साहब लघुवन उपज संघ भोपाल
3. पी सी दुबे साहब, ए पी सी सी एफ भोपाल

अध्यक्ष
सुजाग्रति समाज सेवी
संस्था मुरैना म0प्र0

<u>चम्बल अंचल में दस लाख गुग्गुल बृक्षारोपण मिशन</u>

जल से वन है तो जीवन है, ये ही सबसे बडा धन है। सूखी माटी का करलें श्रंगार उजडे बीहडों में आये बहार। जल से सारे किसान पनपें जल से वन है तो जीवन है।

<u>मिशन का उददेश्य–</u> भिण्ड, मुरैना, श्योपुर जिलों में 105000 हेक्टेयर भूमि के बीहड है जहॉ किसानों के पटटे की जमीन है उसे सजाने और सवारें एवं उससे अजीविका का श्रोत बनाने संकटमय प्रजाती हेतु और बीहड कटाव रोकने जल व मृदा संरक्षण हेतु 10,00000 गुग्गल सतावर, सहजना, करील, चमेंनी, नीम, गिलोह, और ग्वारपाटा का चम्बल अंचल में गुग्गल बृक्षारोपण मिशन चलाया जाना अत्यन्त अवश्यक है।

औचित्यः– गुग्गुल प्रजाति चम्बल के बीहड़ों में पाई जाने वाली विशिष्ट प्रजाति है एवं यहॉ उच्च गुणवत्ता के गुग्गुल पौधे पाये जाते हैं। मृदा तथा भू–भौगोलिक कारणों से इस प्रजाति का संरक्षण एवं संबर्धन इस क्षेत्र हेतु सर्वथा उपयुक्त है।

गुग्गुल के बिषय में पर्याप्त एवं व्यापारिक जानकारी, चीरा लगाने का सही ज्ञान का अभाव में इस प्रजाति का हृास विगत वर्षों में तेजी से हुआ है। इसलिए यह रैड स्पीसीज में आती है। अतः गुग्गुल केन्द्रित परियोजना का क्रियान्वयन आवश्यक है।

<u>सबसे मंहगी औषधी एंव ग्लोवल वार्मिंग में भी आसानी से रहने वाली प्रजाति गुग्गुल</u>– यह ऐसी प्रजाति है जो कि चम्बल के बीहड़ में बहुतायत में पहले पायी जाती थी। किन्तु आज इस में गलत तरीके से चीरा लागाने के कारण यह प्रजाति लुप्त होती जा रही है। यह रेड स्पीसीज में सुमार की गई है। मुरैना जिले में 35,000 हजार हैक्टेयर भूमि वीहड़ में परिवर्तित हो चुकी है तथा भिण्ड श्योपुर और मुरैना में 105000 हेक्टेयर जमीन बीहड बन चुकी है। इसे लगाने हेतु जगहा की कमी नही है। इसका गोंद 1,200रूपये प्रति किलो तथा इसका बीज 10,000हजार रूपये प्रति किलो के भाव से विकता है इसकी मार्केटिंग की भी समस्या नही है। चूॅकि यह प्रजाति खत्म होने के कगार पर है। इसलिए जैवविविधता बोर्ड एंव वन विभाग की यह जिम्मेदारी बनती है कि इसका संरक्षण एवं संबर्धन कराया जाये तथा शासन संस्था के सहयोग से ् इसे पंचायतों में वृक्षा रोपण कराये। इस पौधे को पानी की भी आवश्यकता नही है यह पौधा विना पानी के भी जीवित रहता है। इसलिए ग्लोवल वार्मिंग के इस दौर में ऐसी प्रजाति के पौधे लगाना उपयुक्त होगा तथा यह लोगों की आजिविका का साधन भी बनेगा। जे.एन.के.वि.वि. की इंण्डिया लेवल की सर्वे से यह निकल कर आया है कि पूरे भारत में सिर्फ 10 टन गुग्गुल गोंद पैदा होता है जबकि आवश्यकता 1620 टन की है। इसलिए इसकी मांग बहुत अधिक है। इस हेतु सुजाग्रति संस्था द्वारा 15 सालों के अथक

प्रयासों से इस प्रजाति को बचाया गया है। प्रति बर्ष संस्था द्वारा गुग्गुल नर्सरी में पौधे तैयार कराये जाते हैं, वृक्षा रोपण भी किया जाता है व जैवविविधता प्रंबधन समितियों के माध्यम से इसका संरक्षण एंव संबर्धन किया जा रहा है। किन्तु यह कार्य सिर्फ 7 गांव में ही किया गया। यह कार्य बड़े पैमाने पर करने की आवश्यकता है। जिससे पर्यावरणीय लाभ के साथ–साथ आय वृद्वि होगी। यह पौधा एक अच्छा शॉयल वाइन्डर होने के कारण बीहड़ कटाव भी रोकता है तथा जल संरक्षण भी करता है। इसलिये उक्त तीनों जिलों में 1000 हेक्टेयर भूमि में गुग्गल का बृक्षारोपण करने की अवश्यकता है चूंकि गुग्गल से आय 5 साल के बाद प्राप्त होती है इसलिये तत्काल लाभ हेतु बीच बीच में सताबर सहजना, करील चमेंनी का बृक्षारोपण भी किया जाना उचित होगा जिससे हितग्राही किसानों को लाभ का इन्तजार नही करना पडेगा।

परियोजना की अवधि दस वर्ष होगी–

संस्था का नेटवर्क :–

संस्था का मुरैना जिले के बीहड वाहुल्य ग्रामों की बी एम सी, जे एफ एम सी व पंचायतों के साथ कृषि उघान तथा वन विभाग, एन सी सी एवं 500 गुग्गल हितग्राही किसानों के साथ नेटवर्किंग है। भिण्ड तथा श्योपुर में भी पहचान है सी बी ओ तथा संस्थाओं और वन विभागों के साथ अच्छा जुडाव है।

सुजाग्रति समाज सेवी संस्था का कार्य अनुभव :–

सुजाग्रति समाज सेवी संस्था एक स्वैच्छिक संगठन है जो विगत 20 वर्षों से म0प्र0 के मुरैना जिले में जैवविविधता, गुग्गल संरक्षण एवं संवर्धन पर कार्य कर रही है। समिति का कार्य :–

- स्थानीय जैव सम्पदा का संरक्षण एवं संबर्धन।
- स्थानीय समुदाय आधारित संगठनों का विकास एंव क्षमता बृद्धि।
- जैवविविधता संरक्षण से आजीविकोपार्जन गतिविधियों का संचालन।
- दुर्लभ एवं विलुप्त प्रायः प्रजातियों का संरक्षण एवं संबर्धन।
- समुदाय संचालित जल संरक्षण एवं मृदा संरक्षण कार्यकम।

कार्यक्षेत्र का विवरण कार्य :–

मुरैना जिला चम्बल के बीहडों के बीच में स्थित है। मुरैना जिला 4,998.78 वर्ग कि0मी0 के क्षेत्र में 1,587,264 (2001) की जनसंख्या बाला जिला है इसका नाम मुरैना यहॉ की राष्ट्रीय पहचान मोर के निवास स्थल के रूप में जाना जाता है। मुरैना जिले के उत्तर व पश्चिम में राजस्थान एवं उत्तर पूर्व में उत्तर प्रदेश की सीमायें लगती है इसके समीपवर्ती जिले म0प्र0,

भिण्ड, ग्वालियर व श्योपुर है। यहॉ की औसत वर्षा 700 मि0मी0 है व 35 दिन वारिश के है यहॉ के तापमान में अत्यधिक विभिन्नता है, यहॉ सर्दियों में जहॉ 0 °C तक पहुच जाता है वहीं गर्मीयों में 48 °C तक पहुच जाता है।

मुरैना जिले की प्रमुख नदियॉ चम्बल, क्वारी, आसन एवं सांक है । 435 कि0मी0 के प्रवाह क्षेत्र बाली चम्बल नदी देष की सुन्दरता एवं सबसे कम प्रदूषित नदियों में से एक है। चम्बल नदी घडियाल संरक्षण एवं दुर्लभ डॉलफिन के निवास स्थल के रूप में जानी जाती है।

मुरैना जिले के कुल भोगौलिक क्षेत्रफल के 50% भू–भाग पर कृषि कार्य किया जाता है इस कृषि क्षेत्र का 58.74 % भाग सिंचित कृषि क्षेत्र के अन्तर्गत आता है, नहर सिचाई प्रणाली के द्वारा 42.94 % कृषि भूमि की सिचाई की जाती है। बाजरा खरीफ की व सरसों एवं गेंहू रवी की मुख्य फसलें है।

परियोजना का रख रखाव – परियोजना के सतत संरक्षण हेतु जैवविविधता प्रबंधन समितियॉ, जे एफ एम सी, एस एस जी और एन सी सी के लोग संस्था के साथ मिलकर सतत विकास करते रहेंगे।

गुग्गल पौधा नर्सरी अनुभव – संस्था द्वारा प्रतिवर्ष 10000 गुग्गल पौधों की नर्सरी प्रतिवर्ष तैयार की जाती है व प्लान्टेशन किया जाता है इस वर्ष भी संस्था के 2 नर्सरीयॉ है जिनमें 10–10 हजार पौधे लगे हुये है।

1000 हेक्टेयर भूमि में गुग्गल बृक्षारोपण हेतु आय व्यय–

व्यय– उचित मृदा एवं असिंचित/नदी तटीय क्षेत्र/समस्या ग्रसित मृदा में बृक्षारोपण दस लाख पौधों का एक हेक्टेयर में 1000 पौधे लगाये जायेगें इसलिये दस लाख पौघों के लिये 1000 हेक्टेयर भूमि में पौधा रोपण होगा। हमारे पूर्व कार्य अनुभव अनुसार 1 हेक्टेयर में बृक्षारोपण पर एक अस्सी हजार रू व्यय होता है इसलिये 1000 हेक्टेयर भूमि पर बृक्षारोपण पर व्यय होगा। 80000 x 1000=8,000,0000 (आठ करोड होगा)

आय– चूंकि गुग्गल के 1 पौघे से 250 ग्राम गोंद प्राप्त होता है इसलिये एक बर्ष में इसलिये दस लाख पौधों से गोंद प्राप्त होगा 1000000X250=250000000 ग्राम, इसलिये 250000X1200=30,000,0000(तीस करोड/वर्ष) होगा।

क0	गतिविधियॉ	एन जी ओ सहयोग	को फाइनेंस	एन एम पी बी	कुल
1	नर्सरी में पौधा तैयार करने हेतु	20,00,000	30,00,000	1,50,00,000	2,00,00,000
2	प्लान्टेशन	20,00,000	30,00,000	1,50,00,000	2,00,00,000
3	रख रखाव	30,00,000	40,00,000	1,80,00,000	2,50,00,000
4	सॉयल एण्ड मोस्चुराईजेशन	10,00,000	15,00,000	25,00,000	50,00,000
5	रिप्लेसमेंट	10,00,000	10,00,000	30,00,000	50,00,000
6	एन्ट्री पाइन्ट एण्ड अवेयरनैस	10,00,000	10,00,000	30,00,000	50,00,000
	कुल–	10,00,0000	1,35,00,000	5,65,00,000	8,00,00,000

अध्यक्ष
सुजाग्रति समाज सेवी
संस्था मुरैना म0 प्र0